International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 03(II), July - September, 2024, pp. 62-65

गठबन्धन की राजनीति में 2013 से क्षेत्रीय दलों की भूमिकाः (राजस्थान, हरियाणा एवं पंजाब के सदंर्भ में एक तुलनात्मक अध्ययन)

अंजू कुमारी यादव*

सार

भारत एक प्रजातान्त्रिक देश है। प्रजातान्त्रिक व्यवस्था में जनता द्वारा जनता के कल्याण के लिए एवं जनता द्वारा शासन किया जाता है। प्रजातान्त्रिक शासन प्रणाली में सभी नागरिकों को यह अधिकार होता हैं कि उनकी आवाज को सुना जाए चाहे वो किसी भी धर्म, जाति, लिंग या क्षेत्र के हो। भारत में संघीय शासन प्रणाली अपनाई गई है। संघीय शासन प्रणाली में नीतियां एवं कार्यक्रम राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर बनाए जाते है या उन पर कम ध्यान दिया जाता है। ऐसी परिस्थिति में उन क्षेत्रीय समस्याओं या मुद्दों को आवाज देने और उन पर राष्ट्र का ध्यान आकर्षित करने के लिए क्षेत्रीय दलो का उदय होता है। राजनीतिक दल को लोगों के एक ऐसे संगठित समूह के रूप में समझा जा सकता हैं जो प्राप्त चुनाव लडने और सरकार में राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के उद्देश्य से काम करता है। समाज के सामुहिक हित को ध्यान में रखकर यह समूह कुछ नीतियाँ और कार्यक्रम निश्चित करता है। प्रजातान्त्रिक शासन प्रणाली में क्षेत्रीय दलों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है क्योंकि यह न केवल क्षेत्रीय समस्याओं कि तरफ देश का ध्यान आकर्षित करती है वरन् उसके निवारण के लिए प्रयास भी करती है। भारत में बहुदलीय दल व्यवस्था है जिसमें छोटे क्षेत्रीय दल अधिक प्रबल है। राष्ट्रीय दल वे है जो चार या अधिक राज्यों में मान्यता प्राप्त है। उन्हें यह अधिकार भारत के चुनाव आयोग द्वारा दिया जाता हैं जो विभिन्न राज्यों में समय समय पर चुनाव परिणामों की समीक्षा करता है। भारत के संविधान के अनुसार भारत में संघीय व्यवस्था हैं जिस में नई दिल्ली में केन्द्र सरकार है। इसलिए भारत में राष्ट्रीय व राज्य (क्षेत्रीय), दलों का वर्गीकरण उनके क्षेत्र में उनके प्रभाव के अनुसार किया जाता हैं।

शब्दकोशः *राजनीतिक दल, एकदलीय व बहुदलीय व्यवस्था, गठबन्धन सरकारें, राष्ट्रीय व क्षेत्रीय दल।*

प्रस्तावना

वे दल जिनके पास एक राज्य में पर्याप्त मत या स्थान हो, उन्हे चुनाव आयोग द्वारा राज्य दल के रूप में अधिकृत किया जा सकता है। एक दल को एक या अधिक राज्यों में मान्यता प्राप्त हो सकती है। चार राज्यों में मान्यता प्राप्त दल को स्वतः ही एक राष्ट्रीय दल के रूप मान्यता प्राप्त हो जाती है। भारत में क्षेत्रीय दलों का इतिहास काफी पुराना है। हमारे देश में अनेक क्षेत्रीय दलों का उदय विशेष परिणामस्वरूप हुआ है। पंजाब में

* शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

1920 से ही अधिकारियों की राजनीति चलती आ रही है। कश्मीर में पहले मुस्लिम कांफ्रेस बनी जिसे बाद में नेशनल कान्फ्रेस के नाम से जाना गया। तमिलनाडु मे जस्टिस दल का गठन हुआ। 1949 में द्रमुक दल का गठन हुआ। इसके अतिरिक्त बंगला कांग्रेस, केरल कांग्रेस, विशाल हरियाणा दल, गणतंत्र परिषद् आदि का उदय हुआ हैं। ये सभी दल अलग–अलग राज्यों में प्रभावशाली है न कि किसी विशेष क्षेत्र में।

क्षेत्रीय दलों के उदय के कारण

भारत एक बहुभाषी, बहुजातीय, बहुक्षेत्रीय और विभिन्न धर्मों का देश हैं। भारत जैसे विशाल देश में क्षेत्रीय दलों के उदय के अनेक कारण है। पहला प्रमुख कारण जातीय, सांस्कृतिक एवं भाषायी विभिन्नताएं है। विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों की अपनी समस्याएं होती है जिन पर राष्ट्रीय दलों या केन्द्रीय नेताओं का ध्यान नही जाता, परिणामस्वरूप क्षेत्रीय दलों का उदय होता है। दूसरा कारण केन्द्र अपनी शक्तियों का प्रयोग मनमाने ढंग से करता रहा है। केन्द्र की शक्तियों के केन्द्रीकरण की प्रवृति के कारण जातीय असन्तोष भी रहा है। अनुसूचित जातियों, जनजातियों एवं अन्य पिछड़े वर्गो के लिए सामाजिक न्याय की मांग हेतु भी क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ है।

क्षेत्रीय दलों का स्वरूप

हमारे देश में मुख्य रूप से तीन प्रकार के क्षेत्रीय दल पाए जाते हैं। पहला वे दल जो जाति, धर्म, क्षेत्र, अथवा सामुदायिक हितों का प्रतिनिधित्व करते है। ऐसे दलों में अकाली दल, द्रमुक, शिवसेना, नेशनल कांफ्रेस, झारखण्ड दल, नागालैण्ड नेशनल दल प्रमुख है। दूसरे वे दल जो किसी समस्या विशेष को लेकर राष्ट्रीय दलों विशेषकर कांग्रेस से पृथक होकर बने है। ऐसे दलों में बंगला कांग्रेस, केरल कांग्रेस, उत्कल कांग्रेस, विशाल हरियाणा पार्टी आदि है। तीसरे प्रकार के दल वे दल है जो लक्ष्यों और विचारधारा के आधार पर तो राष्ट्रीय दल है किन्तु उनका समर्थन केवल कुछ लक्ष्यों मुद्दों में केवल कुछ क्षेत्रों तक सीमित है। ऐसे दलों में फारवर्ड मुस्लिम ब्लॉक, क्रांन्तिकारी सोशलिस्ट दल आदि प्रमुख है।

अकाली दल एक राज्य स्तरीय दल है जिसका स्वरूप धार्मिक, राजनीतिक रहा है।

राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका

पिछले कुछ दशकों से हो रहे चुनावों के परिणामों पर गौर करे तो यह समझ आता है कि वर्तमान में ये क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय दलों के लिए बड़ी चुनौती बनते जा रहे है। क्षेत्रीय दलों के कारण इन राष्ट्रीय दलों को कई राज्यों में इनका सहारा लेना पड़ता है। क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय दलों को अपने राज्य में चुनाव लड़वाते है और राज्य की राजनीति में राष्ट्रीय दलों का सहयोग लेकर सत्ता पर आसीन होते है । क्षेत्रीय दल क्षेत्रीय हितों की रक्षा के नाम पर या जाति व्यवस्था के नाम पर उदित होते है और इसी कारण अपना प्रभाव बनाने में सक्षम रहे है। ममता बनर्जी, शरद पवार, पी. ए. सगंमा जिन्होंने कांग्रेस के लिए समस्या बने हुए है। इस प्रकार क्षेत्रीय दल के नेताओं की सोच अपने क्षेत्र विशेष के जाति, समाज व क्षेत्र के विकास की रहती है और इस कारण राज्य स्तर पर यह दल खूब विकसित हो जाते है।

गठबन्धन की राजनीति के नये दौर में क्षेत्रीय दल भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में सक्रीय प्रतिभागी बनकर उभरे है। 1996 के पश्चात् भारतीय राजनीति में अपनी भूमिका तथा स्थिति मजबूत करने के लिए राष्ट्रीय दल को क्षेत्रीय दल से सम्बन्ध स्थापित करने होंगे।

गठबन्धन सरकार का अर्थ है साझी समझ अथवा एंजेडा के आधार पर एक से अधिक राजनीतिक दलों या समूहों का साथ आना। गठबन्धन सरकारों में एक ढांचा होता है क्योकि आम चुनावों के बाद किसी भी एक दल को निर्णायक मत नही मिल पाता है। आजादी के बाद पहली गठबन्धन सरकार केरल राज्य में बनी थी। केन्द्र में पहली गैर कांग्रेस सरकार 1977 में बनी थी।

अनुमान है कि आजादी के बाद से भारत में 2100 से अधिक पंजीकृत राजनीतिक दल हुए हैं। इस समय केन्द्र व राज्य की राजनीति में केवल 8 राष्ट्रीय दल और 30 क्षेत्रीय राजनीतिक दल सक्रिय है।

राजस्थान, हरियाणा एवं पंजाब की राज्य विधान सभाओं में क्षेत्रीय दलों के प्रभाव के कारण गठबन्धन सरकारों का निर्माण हुआ है। पंजाब में स्वतन्त्रता से पूर्व ही शिरोमणी अकाली दल का वर्चस्व बना हुआ है और यह क्षेत्रीय दल कई बार अकेले भी बहुमत के आँकड़े को पार करने वाली दल बना है। 2012 के चुनाव में शिरोमणी अकाली दल एवं भारतीय जनता दल के संयुक्त गठबन्धन ने सत्ता काबिज करके सरकार बनाई वही 2017 के पंजाब विधान सभा चुनाव में अकाली दल व भारतीय जनता दल के गठबन्धन को मुँह की खानी पड़ी एवं कांग्रेस अकेले बहुमत का आँकड़ा पार करने वाले दल के रूप में उभरी।

हरियाणा की राजनीति में क्षेत्रीय दलों का लम्बे समय तक दबदबा रहा है। इन दलों की कमान सम्भालने वाले नेताओं ने प्रदेश में राजनीति करने के साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई। प्रदेश में इस समय इनेलों ही पुराने क्षेत्रीय दल के रूप में सक्रिय है। 1996 में सत्ता में आया इनलो भी यद्यपि 2018 में विभाजित हो गया। इससे जननायक जनता दल बन चुका है। 2014 के हरियाणा के विधानसभा चुनाव में यद्यपि बी. जे. पी., बहुजन समाज दल, कांग्रेस दल, हरियाणा जनहित कांग्रेस, इंडियन नेशनल लोकदल आदि चलाये।

चुनावी मैदान में उतरे किन्तु बी.जे.पी. अकेले बहुमत का आँकड़ा पार कर गई, जहाँ 90 स्थान में बी.जे. पी. 48, इंडियन नेशनल लोकदल 19 व कांग्रेस को 15 स्थान मिले वहीं 2019 के हरियाणा विधानसभा में भाजपा को बी.जे.पी. ने गठबंन्धन सरकार का निर्माण किया जिसमें बी.जे.पी. को 10 स्थान मिले।

राजस्थान राज्य में यद्यपि शुरू से ही क्षेत्रीय दलों का दबदबा नहीं रहा है यहाँ भारतीय जनता दल या कांग्रेस की सरकारें बनती रही है। 2013 के विधानसभा चुनावों में बी.जे.पी. को 200 में से 162 व कांग्रेस को 21, बसपा 3 स्थानों पर सीमट गई। 2018 के राजस्थान विधान सभा चुनावों में यहाँ राष्ट्रीय दलों के साथ नई उदित क्षेत्रीय दलों राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक दल व राष्ट्रीय लोक दल ने चुनावों में भाग लिया किन्तु राष्ट्रीय दलों के दमखम के आगे इन दलों का परिणाम अच्छा नहीं रहा। 2018 में बी.जे.पी. को 71, कांग्रेस को 105, रालोपा को 3 स्थान प्राप्त हुए।

निष्कर्ष

उपर्युक्त वर्णन से पता लगता है कि पंजाब व हरियाणा के बजाय राजस्थान में क्षेत्रीय दलों का उद्‌भव कम हुआ है एवं गठबन्धन सरकार का अस्तित्व भी नहीं रहा। इसके निम्न कारण है–

पंजाब में क्षेत्रीय दल मुख्यत शिरोमणी अकाली दल हैं जिसका उदय स्वतन्त्रा से पूर्व ही धर्म, व क्षेत्रियता के आधार पर हुआ इस कारण धर्म, जाति, अल्पसंख्यक अधिकारों को लेकर यह दल पंजाब की राजनीति में इस प्रभाव बनाये हुए हैं। यह दल कालान्तर में राष्ट्रीय दलों के साथ गठबन्धन करके सत्तारूढ हुआ।

हरियाणा में क्षेत्रीय दलों का विकास हरियाणा राज्य की अलग मांग व स्थानीय हितों को पूरा करने के लिए हुआ। हरियाणा में इंडियन नेशनल लोकतान्त्रिक दल का सत्ता में वर्चस्व रहा जिससे वहाँ की राजनीति में गठबन्धन सरकारों का उदय देखने को मिला।

पंजाब, हरियाणा की अपेक्षा राजस्थान में क्षेत्रीय दलों का उदय नहीं हुआ क्योंकि यह किसी धर्म, जाति की विशेष मांग नहीं है साथ ही साथ यहाँ पर राष्ट्रीय दलों का प्रभाव जमीनी स्तर तक फैला हुआ हैं। राजस्थान में क्षेत्रवाद, पृथकतावाद जैसे मुद्दे गौंण है हालाँकि 2018 के विधानसभा चुनाव में कुछ क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ किन्तु उनका प्रदर्शन नाम मात्र का रहा। राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक दल को मात्र 3 सीटों पर संतोष करना है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आकाश शिंदे : वर्तमान समय में क्षेत्रीय दलों की भूमिका पर निबन्ध, पृष्ठ संख्या 1–5
2. इन्टरनेट
3. दशरथी भुयाम : रोल ऑफ रिजनल पालिटिकल पार्टिया इन इण्डिया ए मिराज, पब्लिशर्स दिल्ली, वर्ष 2007
4. रजनी कोठारी : भारत में राजनीति कल और आज, वाणी प्रकाशन, 2010.
5. रत्नेश कुमार मिश्र : भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दल, रावत बुक प्रकाशन, 2011.
6. ना.मा. घराटे, अटल बिहारी वाजपेयी, गठबन्धन की राजनीति, प्रशान्त प्रकाशन, 2015

पत्र–पत्रिकाएँ

7. इण्डिया टूडे
8. द हिंदू
9. दैनिक जागरण
10. जनसत्ता
11. कुरूक्षेत्र
12. योजना

❖◆❖